अपने धर्मविज्ञान का निर्माण करना

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय तीन

प्रकाशन पर भरोसा करना

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-वस्तु

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका....3

नोट्स....4

1. परिचय (0:28)....4

2. प्रकाशन को खोजना (1:57)....4

A. सामान्य प्रकाशन (2:50)....4

1. माध्यम (3:53)....4

2. विषय-सूची (6:20)....5

B. विशेष प्रकाशन (8:57)....6

C. अन्तर संबंध (11:53)....7

1. दोहराव (12:21)....7

2. आवश्यकता (19:00)....8

3. प्रकाशन को समझना (24:30)....10

A. पाप की रूकावट (25:46)....10

1. सामान्य प्रकाशन (26:40)....10

2. विशेष प्रकाशन (27:58)....11

B. पवित्र आत्मा का प्रदीप्तीकरण (30:13)....11

1. विशेष प्रकाशन (31:45)....12

2. सामान्य प्रकाशन (35:10)....13

C. परिणाम (38:24)....13

4. आत्मविश्वास को विकसित करना (44:41)....15

A. श्रेणीगत गुणवत्ता (46:11)....15

B. सम्मान की प्रक्रिया (52:22)....16

C. उचित संतुलन (59:09)....18

5. उपसंहार (1:03:22)....18

पुनर्समीक्षा के प्रश्न....19

उपयोग के प्रश्न....24

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
    - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
    - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अंतराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अंतराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
    - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें —** जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
    - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
    - पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
    - उपयोग प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

नोट्स

1. परिचय (0:28)

2. प्रकाशन को खोजना (1:57)

दैवीय प्रकाशन को मसीही धर्मविज्ञान में एक केन्द्रीय भूमिका निभानी चाहिए।

A. सामान्य प्रकाशन (2:50)

परमेश्वर स्वयं को सामान्य रूप से सारी रची गई वस्तुओं के द्वारा और सामान्य रूप से सब लोगों पर प्रकट करता है। इसे कई बार "प्राकृतिक प्रकाशन" भी कहा जाता है क्योंकि यह प्रकाशन प्रकृति या सृष्टि के माध्यम से आता है।

1. माध्यम (3:53)

परमेश्वर स्वयं को हम पर सृष्टि के द्वारा, अर्थात जो बनाया गया है उसके द्वारा प्रकट करता है।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

मनुष्य के प्रभाव के अधीन सृष्टि प्रकाशन का माध्यम भी है।

2. विषय-सूची (6:20)

सामान्य प्रकाशन मनुष्यों पर कम से कम दो प्रकार की सूचना को प्रकट करता है :

- परमेश्वर के गुण
- उसके बदले में हमारे नैतिक उत्तरदायित्व

परमेश्वर के गुण जिन्हें प्रत्यक्ष रूप से नहीं देखा जा सकता है वे अप्रत्यक्ष रूप से उसकी सृष्टि में दिखाई देते हैं।

सृष्टि के विविध पहलू परमेश्वर के प्रति हमारी नैतिक जिम्मेदारी को प्रकट करते हैं।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

B. विशेष प्रकाशन (8:57)

यह हर जगह पर सब लोगों को नहीं दिया जाता है, बल्कि मानवजाति के विशिष्ट या विशेष गुट को दिया जाता है।

इतिहास में विशेष प्रकाशन के बहुत से रूप रहे हैं, परन्तु परमेश्वर ने स्वयं को सर्वाधिक स्पष्ट और पूर्ण रूप में अपने पुत्र, यीशु में प्रकट किया है।

मसीह के आगमन से पूर्व, परमेश्वर ने अपने आप को और अपनी इच्छा को बहुत सी विशेष रीतियों में प्रकट किया :

- उसने सीधे लोगों से बात की
- उसने अलौकिक स्वप्न दिए
- उसने दर्शनों के लिए उनकी आँखों को खोला
- उसने भविष्यद्वक्ताओं, याजकों, राजाओं तथा साधुओं के द्वारा बातें की

मसीही धर्मविज्ञान का प्रमाप मसीह में परमेश्वर का प्रकाशन है।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

C. अन्तर संबंध (11:53)

अन्तर संबंध इस बात को देखने में हमारी सहायता करेंगे कि हमें प्रकाशन के दोनों रूपों में से किसी को भी अनदेखा नहीं करना चाहिए।

1. दोहराव (12:21)

सामान्य और विशेष प्रकाशन महत्वपूर्ण रूप से एक-दूसरे का दोहराव हैं।

पवित्र शास्त्र में विशेष प्रकाशन असाधारण से लेकर बहुत ही सामान्य बातों तक बहुत से विभिन्न विषयों को छूता है।

- अत्यधिक विशेष प्रकाशन — गुप्त; असाधारण, अलौकिक रीतियों में दिया गया।

- मध्यम जगह — गुप्त अन्तर्दृष्टियों और आत्मा द्वारा साधारण तरीकों से प्रदान की गई अन्तर्दृष्टियों का मिश्रण।

- साधारणीकृत विशेष प्रकाशन — पवित्र आत्मा ने अक्सर बाइबलीय लेखकों को साधारण अनुभवों के बारे में सही निरीक्षण करने का मार्गदर्शन दिया।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

सामान्य प्रकाशन में भी एक विस्तृत विषय-वस्तु शामिल होती है।

- अत्यधिक सामान्य प्रकाशन — बातें जो यदि संसार में अब तक रहे सभी बौद्धिक रूप से स्वस्थ लोगों को नहीं, तो भी अधिकांश लोगों को ज्ञात हैं।

- मध्यम जगह —वे अनुभव जो केवल कुछ लोगों को दिए जाते हैं क्योंकि वे कुछ रीतियों जैसे समय या स्थान के द्वारा सीमित हैं।

- विशिष्ट सामान्य प्रकाशन — असाधारण तत्व; वे बातें शामिल हैं जिन्हें हम अक्सर ज्यादा निकटता से विशेष प्रकाशन से जोड़ते हैं।

हम वचन को न केवल पूर्णत: धार्मिक एवं नैतिक मामलों में, बल्कि इतिहास एवं विज्ञान के क्षेत्र में भी अधिकारपूर्ण मानते हैं।

2. आवश्यकता (19:00)

विशेष प्रकाशन की रचना इसलिए की गई है कि वह परमेश्वर और उसकी इच्छा को इस प्रकार विशेष रूप से स्पष्ट और प्रकट करे जो सामान्य प्रकाशन की पेशकश से कहीं श्रेष्ठ है।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

सामान्य प्रकाशन (प्राकृतिक धर्मविज्ञान) से धर्मविज्ञान के निर्माण की प्रक्रिया का मार्गदर्शन विशेष प्रकाशन द्वारा होना चाहिए।

पवित्र शास्त्र प्रत्यक्ष रूप से सीमित संख्या में बातों का वर्णन करता है, और यह कि सामान्य प्रकाशन के विस्तार की तुलना में पवित्र शास्त्र केवल कुछ ही बातों के बारे में बात करता है।

सामान्य और विशेष प्रकाशन के विभिन्न पहलू पारस्परिक संबंधों के जाल बुनते हैं।

सामान्य प्रकाशन की भूमिका :

- सामान्य प्रकाशन से हम जो कुछ सीखते हैं वह हमें विशेष प्रकाशन को समझने के योग्य बनाता है।

- बाइबल को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए भी सामान्य प्रकाशन आवश्यक है।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. प्रकाशन को समझना (24:30)

परमेश्वर द्वारा हमें अपना प्रकाशन देना एक बात है, और हमारे द्वारा धर्मविज्ञान में उसका उचित प्रयोग एक दूसरी बात है।

A. पाप की रूकावट (25:46)

यदि परमेश्वर पाप के प्रभाव को ऐसे ही छोड़ दे, तो हम उसके प्रकाशन को अपनी पूरी ताकत से ठुकरा देंगे।

पाप के दिमागी प्रभाव: हमारे मस्तिष्क को अन्धकारमय कर देता है।

1. सामान्य प्रकाशन (26:40)

परन्तु पाप हम जो कुछ जानते हैं उसमें से अधिकांश को दबा देता है और सामान्य प्रकाशन की अधिकांश बातों के प्रति हमें अन्धा बना देता है।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

हम इस हद तक परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित हैं कि हम सामान्य प्रकाशन के तथ्यों को तोड़-मरोड़कर अपनी निकम्मी लालसाओं के अनुरूप बना देते हैं।

2. विशेष प्रकाशन (27:58)

यदि पापी मनुष्यों को परमेश्वर की दया के बिना छोड़ दिया जाए तो वे वचन की शिक्षा का विरोध करते हैं।

बाइबल की पापपूर्ण गलत व्याख्या की यह समस्या केवल अविश्वासियों तक ही सीमित नहीं है; यह विश्वासियों में भी फैली हुई है।

B. पवित्र आत्मा का प्रदीप्तीकरण (30:13)

प्रकाशन से सच्चे धर्मविज्ञान को लेना हमारे जीवनों में पवित्र आत्मा की व्यक्तिगत सेवकाई का परिणाम है।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

1. विशेष प्रकाशन (31:45)

प्रदीप्तीकरण : विशेष प्रकाशन की अन्तर्दृष्टि देने का आत्मा का कार्य

परमेश्वर का आत्मा गैर-छुटकारे के रूपों कार्य करता है ताकि गैर-मसीही लोग भी विशेष प्रकाशन के बहुत से पहलूओं को समझ सकें।

- आत्मा के सामान्य कार्य

- सामान्य अनुग्रह के सन्दर्भ में

आत्मा के प्रदीप्तीकरण का कार्य गैर-विश्वासियों की बजाय विश्वासियों के बीच अधिक होता है।

परमेश्वर का आत्मा हमें प्रकाश देता है, इसलिए मसीही धर्मविज्ञानियों को ईमानदारी और पूरे मन से आत्मा के साथ बने रहने के लिए समर्पण करना चाहिए।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. सामान्य प्रकाशन (35:10)

पवित्र आत्मा स्त्रियों और पुरुषों को सामान्य प्रकाशन को सही रीति से सँभालने की योग्यता देता है।

- बुद्धि

- प्रदीप्तीकरण

परमेश्वर का आत्मा विश्वासियों और गैर-विश्वासियों दोनों को सामान्य प्रकाशन के सत्य सिखाता है।

C. परिणाम (38:24)

मसीहियों को सामान्य और विशेष प्रकाशन दोनों के आधार पर धर्मविज्ञान का निर्माण करना चाहिए।

सामान्य और विशेष प्रकाशन वास्तव में कभी एक-दूसरे का विरोध नहीं करते हैं। परमेश्वर के लिए सारी सृष्टि और वचन में प्रकट की गई बातों को एक साथ मिलाना मुश्किल नहीं है।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

विशेष और सामान्य प्रकाशन से जो जानकारी हमें है :

- वह प्रकाशन के बारे में नहीं है।
- वह सदा सिद्धता से कम ही रहती है।

जब हम विशेष और सामान्य प्रकाशन के बीच स्पष्ट अन्तरों का सामना करते हैं :

- तो शायद हमने विशेष प्रकाशन को गलत समझा हो।
- तो शायद हमने सामान्य प्रकाशन को गलत समझा हो।
- तो शायद हमने विशेष और सामान्य प्रकाशन दोनों को समझने में गलती की हो।
- तो शायद हमारा किसी ऐसे रहस्य से सामना हुआ हो जो हमारी मानवीय समझ के परे है।

ऐसे निर्णय को मान लें जो आप मानते हैं कि बाइबल सिखाती है – चाहे आपको पवित्रशास्त्र के बारे में अपनी समझ बाद में सुधारना पड़े।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

4. आत्मविश्वास को विकसित करना (44:41)

A. श्रेणीगत गुणवत्ता (46:11)

दोहरी विचारधारा : सुसमाचारिय मसीही अक्सर इन बातों के बारे में सोचते हैं :

- जिन बातों के बारे में वे जानते हैं
- जिन बातों के बारे में वे नहीं जानते

स्थिति दोहरे माँडल के सुझाव से कहीं ज्यादा पेचीदा है।

दोहरी विचारधारा : हम हमारे धर्मविज्ञानी विश्वासों को आत्म-विश्वास के बदलते स्तरों के साथ रखते हैं।

विश्वासों का जाल :

- बाहरी परत — कम भरोसा; हम इन विश्वासों के साथ आसानी से बदलते, हटाते, और जोड़ते हैं।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- केंद्र — अधिक भरोसा; इन मुख्य विश्वासों में सुधार करना, हटाना या जोड़ना बहुत मुश्किल है। वे उन सब अन्य बातों को प्रभावित करते हैं जिन पर हम विश्वास करते हैं।

- बीच की परतें — भरोसे और समर्पण के बदलते स्तर

प्रत्येक मसीही धर्मविज्ञान में आत्मविश्वास के विविध स्तर प्रकट होते हैं।

B. सम्मान की प्रक्रिया (52:22)

सम्मान की प्रक्रिया के द्वारा पवित्र आत्मा हमें सिखाता और क़ायल करता है। हम प्रभावों में समर्पित रहते हैं जिनका पवित्र आत्मा आमतौर पर हमें सिखाने के लिए उपयोग करता है।

"परमेश्वर अपनी साधारण संभाल में, साधनों का उपयोग करता है, फिर भी वह अपनी इच्छानुसार उनके बिना, उनके ऊपर और उनके विरूद्ध कार्य करने के लिए मुक्त है।" (वेस्टमिन्स्टर विश्वास का अंगीकार 5.3)

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पवित्र आत्मा हमें प्रदीप्त करता है और साधारण एवं असाधारण रीतियों से हमारे धर्मविज्ञानी आधारों की पुष्टि करता है।

औपचारिक धर्मविज्ञान में हम उन सामान्य प्रक्रियाओं को महत्व देते हैं जिनका इस्तेमाल आत्मा करता है।

- *वचन की व्याख्या* : व्याख्या

- सामुदायिक मेल-जोल : संपूर्ण मानवजाति के साथ मेल-जोल, विशेषकर विश्वासियों के साथ।

- *मसीही जीवन :* सफलता और नाकामी के अनुभव, प्रार्थनाएँ, आराधना, और परमेश्वर की सेवा

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

C. उचित संतुलन (59:09)

हमें हमारे विभिन्न विश्वासों में आत्मविश्वास के विभिन्न स्तरों में उचित सन्तुलन कैसे लाना चाहिए।

मसीही धर्मविज्ञानियों के रूप में हमारी एक मुख्य जिम्मेदारी यह निर्धारित करना है कि हम अपने विशिष्ट विश्वासों को किस स्तर पर रखें।

हमें अपने आत्मविश्वास के स्तरों को व्याख्या, बातचीत और मसीही जीवन के प्रति विश्वासयोग्य सम्मान के परिणामों के अनुरूप सन्तुलित करना चाहिए।

- जितना अधिक सामंजस्य होगा, उतना ही अधिक हमारे अन्दर आत्मविश्वास होना चाहिए।

- जब व्याख्या, बातचीत और मसीही जीवन के प्रभावों के असामंजस्यपूर्ण और भार में बराबर होने पर हम में आत्म-विश्वास की कमी हो जाती है।

5. उपसंहार (1:03:22)

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. सामान्य प्रकाशन क्या है? यह हमें क्या सिखाता है?

2. विशेष प्रकाशन क्या है? यह हमें क्या सिखाता है?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. दोहराव और आवश्यकता के आधार पर सामान्य और विशेष प्रकाशन के बीच पारस्परिक संबंधों का वर्णन करें।

4. प्रकाशन से धर्मविज्ञान को लेना क्यों महत्वपूर्ण है?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. किस प्रकार पाप परमेश्वर के सामान्य और विशेष प्रकाशन की हमारी समझ में बाधा उत्पन्न करता है?

6. पवित्र आत्मा किस प्रकार हमें परमेश्वर के विशेष और सामान्य प्रकाशन को समझने में सहायता करता है?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. सामान्य और विशेष प्रकाशन के बीच पाए जाने वाले स्पष्ट संघर्ष को हमें किस प्रकार संभालना चाहिए?

8. इस बात का क्या अर्थ है कि धर्मविज्ञानी परिणाम दोहरे होने की अपेक्षा श्रेणीगत हैं?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

9. व्याख्या, समुदाय और मसीही जीवन के प्रति समर्पित होने की प्रक्रिया का वर्णन करें। यह प्रक्रिया सहायक क्यों है?

10. हम हमारे विभिन्न विश्वासों को आत्म-विश्वास के उचित स्तर कैसे प्रदान कर सकते हैं?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. किस प्रकार सामान्य प्रकाशन के माध्यम से प्राप्त परमेश्वर के प्रति आपकी समझ आपको उसके और निकट लेकर जा सकती है?

2. विशेष और सामान्य प्रकाशन के बीच पाई जाने वाली समानताएं और भिन्नताएँ किस प्रकार उस तरीके को बदल देती है जिसमें एक व्यक्ति धर्मविज्ञान की क्रिया करता है?

3. इस बात को जानना आपको कैसा अनुभव कराता है कि पाप अभी भी हमारे भीतर परमेश्वर के प्रकाशन को दबाने और झुकाने में कार्यरत है? पवित्र आत्मा क्या आशा लेकर आता है? हम पाप के दिमागी प्रभावों के कारण पैदा होने वाली धर्मविज्ञानीय भ्रांतियों से कैसे बच सकते हैं?

4. धर्मविज्ञानीय आधार में हमारे आत्म-विश्वास को श्रेणीगत रूप से समझना क्यों आवश्यक है? एक ऐसी स्थिति का वर्णन करें जिसमें आत्म-विश्वास के प्रति दोहरी समझ कलीसिया में समस्या उत्पन्न कर सकती है?

5. व्याख्या, समुदाय और मसीही जीवन का आपके विश्वासों पर क्या प्रभाव पड़ा है? इनमें से कौनसे प्रभाव आपके लिए सबसे महत्वपूर्ण रहे हैं? क्यों?

6. सबसे अधिक आत्म-विश्वास के साथ आप कौनसे विश्वासों को रखते हैं? सबसे कम आत्म-विश्वास के साथ आप कौनसे विश्वासों को रखते हैं? आप इन विशेष विश्वासों को आत्म-विश्वास के ये स्तर क्यों प्रदान करते हैं?

7. इस अध्ययन से आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है? क्यों?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org